अनौपचारिका

समकालीन शिक्षा-चिन्तन की मासिक पत्रिका

वर्ष : 52 अंक : 12 मार्गशीर्ष-पौष वि.सं. 2082 दिसम्बर, 2025 पृष्ठ-28 RNI 43602/77 ISSN No.2581-981x

समिति में मोहन गुरुस्वामी का व्याख्यान

देश के समक्ष खड़े ज्वलंत राजनीतिक और आर्थिक मुद्दों पर लोक नीति तथा अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों के जाने-माने विश्लेषक मोहन गुरुस्वामी के गत 4 नवम्बर को राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति में प्रमुख विशेषज्ञों के समक्ष करीब डेढ़ घंटे का सारगर्भित व्याख्यान दिया।

गुरुस्वामी ने अर्थव्यवस्था में बढ़ते वैश्विक असंतुलन के बरक्स भारत की स्थिति का विश्लेषण किया। विकेंद्रीकृत व्यवस्था से कांग्रेस के दौर में आए केंद्रीकृत विचलन से लेकर मौजूदा दौर तक के केंद्रीकरण पर उन्होंने उदाहरणों के साथ प्रकाश डाला।

उन्होंने 1990 के दशक के बाद भारतीय अर्थव्यवस्था में आए तेज उछाल का जिक्र करते हुए राज्यों, खास कर उत्तर और दक्षिण, के बीच असंतुलित हिस्सेदारी को रेखांकित किया। राज्यों से प्राप्त होने वाले कर राजस्व तथा उसके मुकाबले वहां होने वाले खर्च के आँकड़े देते हुए उन्होंने बताया कि प्रत्येक सौ रुपयों के के प्रत्यक्ष कर संग्रहण के मुकाबले राज्यों को मिलने वाले रुपयों में अंतर है।

उन्होंने देश के संघीय ढांचे की विकेंद्रीकृत व्यवस्था के एकीकृत केंद्रीय सत्ता की ओर बढ़ते झुकाव को इंगित किया जो शनैः शनैः अधिक गहरा होता जा रहा है। उनका कहना था कि संसद की सीटों के अगले सीमांकन के बाद उत्तरी राज्यों का वर्चस्व और बढ़ जाएगा।

जयपुर स्थित एमएनआईटी संस्थान के पूर्व प्रोफेसर तथा वर्तमान में बांग्लादेश की राजधानी ढाका में विश्व बैंक के तकनीकी सलाहकार देव कुमार द्विवेदी तथा प्रशासनिक प्रशिक्षण संस्थान में प्रोफेसर रहे मोहम्मद हसन के प्रयासों से समिति में यह व्याख्यान हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रख्यात पत्रकार तथा हरिदेव जोशी पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति ओम थानवी ने की।

कार्यक्रम में पीयूसीएल की अध्यक्ष कविता श्रीवास्तव के अलावा नगर के अनेक ख्यातनाम साहित्यकार और उच्च शिक्षा के विद्वान मौजूद थे।❑

सत्येनोत्पद्यते धर्मो दया दानेन वर्धते।
क्षमया स्थाप्यते धर्मः क्रोध लोभाद विनश्यति।।

- महाभारत

धर्म सत्य से उत्पन्न होता है। करुणा और समर्पण से यह बढ़ता है। सहनशीलता से यह स्थायी रहता है (अस्तित्व में बना रहता है)। क्रोध और लोभ से यह लुप्त हो जाता है।

समानो मन्त्रः समितिः समानी समानं मनः सहचित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभिमन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि।।
समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।। ऋग्वेद

अनौपचारिका

समकालीन शिक्षा-चिन्तन की पत्रिका

वर्ष : 52 अंक : 12 मार्गशीर्ष-पौष वि.सं. 2082 दिसम्बर, 2025 मूल्य : पचास रुपये

क्र म

वाणी

3. महाभारत

संपादकीय

5. शिक्षा व्यक्ति और समाज दोनों को उजाला देती है!

विमर्श

7. एआई सीखने सिखाने के नय नियम लिख रही है
– साक्षी रेवाड़िया

अध्ययन

10. मस्तिष्क को स्क्रीन की नहीं, किताब की ज़रूरत है!
– बीजिन जोस

13. क्या संतान जीवन में स्थायित्व और प्रसन्नता लाती है?
– डॉ. लता व्यास

14. हुसैन की कलात्मक विरासत को संजोता संग्रहालय
– राधिका अयंगर

लेख

16. वर्तमान समय में एक चिकित्सक का जीवन वृत्त
– डॉ. विवेक एस.अग्रवाल

18. शिक्षा सामाजिक बदलाव की वाहक कैसे बने!
– राजेन्द्र भाणावत

अनिल बोर्डिया स्मृति व्याख्यान

20. सरकार शिक्षा की सुविधाकर्ता है नियंत्रक नहीं!

छगन मोहता स्मृति व्याख्यान

22. आर्थिक नीतियां असंगठित क्षेत्र को मदद करे

गतिविधियां

23. निज़ाम पर जोधपुर में राष्ट्रीय संगोष्ठी

24. हाथ से लिखना आत्मा से संवाद है!

25. शिक्षा की अलख : प्रकृति को बचाने की शिक्षा

समाचार

26. भारत के दानवीरों की रैंकिंग में शिव नादर

महात्मा गांधी का कथन

27. सत्य के अलावा कोई कूटनीति नहीं

क्रिसमस की शुभकामनाएं

राजस्थान प्रौढ़ शिक्षण समिति
7-ए, झालाना डूंगरी संस्थान क्षेत्र,
जयपुर-302004
फोन : 2700559, 2706709, 2707677
ई-मेल : raeajaipur@gmail.com
www.raea.in

संपादक :
राजेन्द्र बोड़ा
प्रबंध संपादक :
दिलीप शर्मा

संपादकीय

शिक्षा व्यक्ति और समाज दोनों को उजाला देती है!

शिक्षा केवल पुस्तकों, परीक्षाओं और अंकों तक सीमित नहीं होती। इसका वास्तविक स्वरूप मनुष्य के भीतर सोचने–समझने की क्षमता को विकसित करना होता है। शिक्षा हमें दुनिया को देखने का सही दृष्टिकोण देती है और उतनी ही गहराई से अपने भीतर झांकने की प्रेरणा भी देती है। शिक्षित मनुष्य न केवल बाहरी संसार को समझता है बल्कि स्वयं का भी सही मूल्यांकन कर पाता है। यही शिक्षा का सबसे बड़ा उद्देश्य है - दूसरों के प्रति संवेदनशीलता और स्वयं के प्रति जागरूकता।

सच तो यह है कि जब हम किसी से संवाद करते हैं तब उसमें कहने और सुनने के बीच के अंतर को समझने की कोशिश नहीं करते। संवाद बहस में तब्दील हो जाता है। जिस दिन यह बात समझ में आ जाती है, व्यक्ति पहले जैसा नहीं रहता। शिक्षा यह समझ देती है। इससे व्यक्ति का अपने से बिल्कुल विपरीत लोगों के साथ धैर्य बढ़ जाता है।

जब कुछ भी कहा जाता है तो वह बात जिसे कही जा रही है उसके संदर्भ, पूर्वाग्रहों और पूर्वकल्पित विचारों के माध्यम से फ़िल्टर होकर उस तक पहुंचती है और जो बचता है वह अंततः वह संदेश होता है जिसे वह समझता है। अनेक कारणों से यह संभव है कि जो व्यक्त किया जा रहा है उसकी दूसरा बिल्कुल अलग तरीके से व्याख्या कर ले। वास्तव में जो समझा जाता है, वह स्वाभाविक रूप से इस बात पर निर्भर करता है कि किससे बात की जा रही हैं, लेकिन यह बहुत दुर्लभ है कि पूरा संदेश ठीक उसी तरह से पहुंच जाए जैसा कहने वाले ने आपने दिमाग में सोचा था। शिक्षा मनुष्य को संचार का कौशल सिखाती है।

शिक्षा हमें विविधता का सम्मान करना भी सिखाती हैचाहे वह जाति की हो, भाषा की हो, विचारों की या जीवनशैली की हो। जब हम सही नज़रिया रखते हैं तो हमारे भीतर धैर्य, सहनशीलता और सहानुभूति जैसे गुण स्वतः विकसित हो जाते हैं। इससे समाज में आपसी समझ बढ़ती है और संघर्ष के अवसर कम हो जाते हैं। शिक्षा दूसरे के नज़रिये से देखने की कला सिखाती है। अशिक्षित मन अक्सर पूर्वाग्रहों, संकीर्णता और गलत धारणाओं से घिरा रहता है। लेकिन शिक्षित व्यक्ति दूसरों को उनके व्यवहार, परिस्थितियों और सोच के आधार पर समझने की कोशिश करता है। वह यह जानता है कि हर व्यक्ति की पृष्ठभूमि अलग होती है, अनुभव अलग हैं।